खण्ड –4, अंक – 1, वर्ष – 2016, मु0पृ0 19–21, D.O.I. :10.22445/avsp.v4i1.4370 शोध पत्र

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

दिनेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग
पी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़–230143, उ0प्र0, भारत
dineshpbpg13@gmail.com

प्राप्त तिथि– 22.07.2016; स्वीकृत तिथि– 31.08.2016

सार– वर्तमान अध्ययन में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्य मूल्यों का अध्ययन करना मुख्य उद्देश्य था। अध्ययन हेतु 60 विद्यार्थियों का समूह(छात्र/छात्राएं), जिनमें 30 छात्र तथा 30 छात्राएं थी तथा प्रत्येक समूह में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र से विद्यार्थी लिये गये। प्रत्येक उपचार में 15 प्रयोज्य को लिया गया। डा0 आर0 के0 ओझा(1971) द्वारा निर्मित मापनी का प्रयोग प्रत्येक प्रयोज्य पर वैयक्तिक किया गया। प्राप्त आंकड़ों पर टू वे एनोवा का प्रयोग किया गया। शहरी क्षेत्र के छात्रों का माध्यमान = 107.666 तथा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का माध्यमान = 110.667 पाया गया। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मूल्य स्तर अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

बीज शब्द– ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी, मूल्यों का अध्ययन।

Comparative analysis of values of rural and urban students

Dinesh Kumar
Assistant Professor, Department of Psychology
P.B.P.G. College, Pratapgarh-230143, U.P., India
dineshpbpg13@gmail.com

Abstract- In present studies value was studied between urban and rural students. A group of 60 students in which there were 30 girls and 30 boys and each group included both from urban and rural area. 15 subjects were taken in each treatment and each subject were treated individual personality with a measurement devised by Dr. R. K. Ojha(1971). Two way Anova was experimented on the data obtained. The mean of urban students was found 107.666 and rural area students was 110.667.The value level of rural students was found to be more as compared urban students. A significant difference was not noticed between them.

Key words- Student of rural and urban areas, study of values.

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होते हैं, जो समय की गति के साथ–साथ बढ़ते जाते हैं इन्हीं अनुभवों के कुछ सामान्य सिद्धान्त जन्म लेते हैं, जो मानव के व्यवहार को निर्देशित करते हैं, ऐसे सामान्य सिद्धान्तों को जो समस्त जीवन को एक दर्शन के रूप में परिवर्तित कर देते हैं तथा समस्त जीवन जीने की एक विशिष्ट कला को जन्म देते हैं, एवं उनके पथ–प्रदर्शक के रूप में कार्य करतें हैं। उन्हें मूल्य के नाम से जाना जाता है। व्यक्ति के मूल्य इस बात का दर्पण होते हैं कि वे अपनी सीमित शक्ति एवं समय में क्या करना चाहते हैं, जीवन के पथ–प्रदर्शक के रूप में मूल्य अनुभवों के साथ–साथ अधिक परिपक्व हो जाते हैं। मूल्य व्यक्ति की रुचियों, प्रेरणाओं एवं अभिप्रेरणाओं की ओर इंगित करते हैं। ब्राइटमैन[1] ने बताया कि मूल्यों से हमारा तात्पर्य किसी पसन्द, पुरस्कार, वांछित वस्तु या आनन्द से है। किसी क्रिया या वांछित वस्तु का वास्तविक अनुभवों पर आनन्द प्राप्त करना ही मूल्य समझा जाता है। मूल्य सामान्य रूप से किसी उद्देश्य की प्राप्ति का एक विन्यास है।

2. **मूल्य का मापन/विधि–** मूल्य मापन की दो विधियाँ उपलब्ध हैं, प्रथम मैरिस की, जिसमें विभिन्न मानवीय मूल्यों का मापन किया जाता है तथा द्वितीय आलपोर्ट की[2], जिसमें व्यक्ति के सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक रुचियों एवं अभिवृत्तियों का मापन किया जाता है। मूल्य अध्ययन की सर्वप्रथम रचना आलपोर्ट ने की तथा लिण्डर्ज के सहयोग से इसे संशोधित किया गया।[3] भारत में सर्वप्रथम मूल्य मापन के क्षेत्र में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कार्तिक राय चौधरी[4] द्वारा किया गया। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्र/छात्राओं पर पड़ने वाले मूल्यों के प्रभावों का अध्ययन करना है।

3. **परिकल्पना**

1. मूल्यों पर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
2. मूल्यों पर छात्र/छात्राओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों तथा छात्र/छात्राओं के चरों के मध्य अन्तःक्रिया में सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

4. **अभिकल्प–** वर्तमान अध्ययन में 2X2 द्विकारक अभिकल्प समूह का प्रयोग किया गया है जिसमें प्रथम चर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र तथा द्वितीय चर छात्र एवं छात्राओं के लिए गये हैं।

परिवर्त्य–

स्वतन्त्र परिवर्त्य– क. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र
ख. छात्र एवं छात्राएँ
आश्रित परिवर्त्य– मूल्य

प्रतिदर्श– यह अध्ययन कुछ 60 विद्यार्थियों पर किया गया, जिसमें 30 विद्यार्थी शहरी क्षेत्र से तथा 30 ग्रामीण क्षेत्र से लिए गये एवं दो समूह बनाये गये। 30 छात्र व 30 छात्राएं शामिल की गयी।

सामग्री– मूल्य की मात्रा को मापने के लिए स्टडी आफ वैल्यूज का प्रयोग किया, जो डॉ0 आर0 के0 ओझा[5] द्वारा बनायी गयी मापनी है।

विश्वसनीयता– स्टडी आफ वैल्यूज की कूडर रिचर्डसन सूत्र से प्रत्येक मूल्य की विश्वसनीयता + 0.69 से + 0.89 पायी गयी।

प्रशासन प्रक्रिया– सर्वप्रथम कालेज में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र/छात्राओं को छाँटा फिर उन्हें परीक्षण का उद्देश्य बताया गया तथा उनकी रुचि उत्पन्न की गयी, फिर उन्हें स्टडी आफ वैल्यूज[6] प्रश्नावली दी गयी, तथा बताया गया कि इस प्रश्नावली के दो भाग हैं। प्रथम भाग में 30 कथन हैं तथा द्वितीय भाग में 15 कथन हैं। प्रथम भाग में प्रत्येक कथन के दो उत्तर हैं यदि आप अ से सहमत हैं और ब से असहमत हैं तो प्रथम कोष्ठ अ में संख्या तीन तथा ब में शून्य लिख दें। इस प्रकार यदि आप ब से सहमत हैं तो 3 तथा अ से असहमत हों तो शून्य लिख दें यदि आपका कथन ब से कुछ अधिक प्राथमिकता देना चाहते हैं, तो अ में 2 तथा ब में 1 और यदि कथन अ से कथन ब को अधिक प्राथमिकता देना चाहते हैं तो पहले अ में संख्या–1 तथा ब में 2 लिख दें। भाग दो में कुल पन्द्रह कथन हैं प्रत्येक को चार भाग में अ,ब,स,द में बाँटा गया है। जिस कथन से आप अत्यधिक सहमत हों उसके सामने चार लिखा है। यदि कम सहमत हैं तो तीन या सबसे कम सहमत हैं तो शून्य लिख दें।

प्राप्तांक– स्टडी आफ वैल्यूज में कुल पैंतालीस कथन हैं भाग एक में तीस कथन तथा भाग दो में पन्द्रह कथन हैं। भाग में प्रत्येक कथन का दो भागों में बाँटा गया है। जिसमें आप अधिकतम तीन अंक तथा न्यूनतम शून्य अंक दे सकते हैं। इस प्रकार भाग एक अधिकतम प्राप्तांक नब्बे तथा न्यूनतम शून्य हो सकता है। भाग दो में कुल पन्द्रह कथन हैं तथा प्रत्येक कथन का अधिकतम प्राप्तांक साठ तथा न्यूनतम पन्द्रह हो सकता है। इस प्रक्रिया द्वारा सभी साठ प्रयोज्यों के मूल्यों के अध्ययन प्राप्तांकों को ज्ञात किया गया।

5. **परिणाम व निष्कर्ष–** प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र/छात्राओं पर बढ़ने वाले मूल्यों के प्रभावों का अध्ययन करना था। अध्ययन से प्राप्त प्राप्तांक के सांख्यिकी विश्लेषण में टू वे एनोवा का प्रयोग किया गया, प्राप्त परिणाम निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

प्रसारण के स्रोत Source of Variance	वर्गों का योग S.S.	D.F.	M.S.	F-Ratio
अ. (शहरी,ग्रामीण क्षेत्र)	33.449	1	33.449	0.714
ब. (लिंग)	50.416	1	50.416	1.067
अ x ब	20.419	1	20.419	0.432
त्रुटि	2644.999	56	47.232	
योग	2749.583	59		

$F.95(1,56) = 4.03$

प्रथम शोध अध्ययन में पाया गया कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का स्तर उच्च है, शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के मूल्य का मध्यमान 107.5 तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मूल्य का मध्यमान 109.33 पाया गया। द्वितीय भाग में शहरी क्षेत्र के छात्रों का मध्यमान मूल्य 107.66 तथा छात्राओं का मध्यमान मूल्य 107.37 पाया गया। ऐसा इसलिए संभव है कि शहर की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र में संयुक्त परिवार होता है तथा उसमें मूल्यों के द्वारा प्रत्येक को बताया जाता है।[7] छात्रों में मूल्य अधिक पाया जाता है। हमने इस शोध में टू वे एनोवा का प्रयोग किया। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में तथा लिंग में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सन्दर्भ

1. ब्राइटमैन(1958) स्टडी एण्ड मीजरमेंट ऑफ वैल्यूज, पृ0 526।
2. आलपोर्ट, जी0 डब्ल्यू0(1955) बिकमिंग बेसिक कन्सीडरेशन्स फॉर साइकोलॉजी आफ पर्सनैलिटी, येल यूनिवर्सिटी प्रेस वेब।
3. आलपोर्ट, वर्नन एण्ड लेण्डजे(1960) मैनुअल फार द स्टडी आफ वैल्यूज, बोस्टन पी0आई0, पृ0 9।
4. चौधरी, के0 राय(1958) अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़।
5. ओझा, आर0 के0(1971) वैल्यू टेस्ट, आगरा, नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।
6. शेरी, जी0 पी0 एण्ड वर्मा आर0 पी0(1973) पर्सनल वैल्यू क्वैश्चनायर(पी.वी.क्यू.), आगरा नेशनल साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन।
7. मैक्क्रेकन, जे0 डेविड(1991) जर्नल आफ रिसर्च आफ रूरल एजूकेशन, खण्ड–7, अंक–2, मु0पृ0 29–40।